

## **NHRC issues notice to Centre on Pedestrian rights**

<https://www.newindianexpress.com/nation/2024/Oct/06/nhrc-issues-notice-to-centre-on-pedestrian-rights>

Acting on a petition filed by Supreme Court advocate and noted human rights activist, Radhakanta Tripathy, the NHRC passed the order.

Suchitra Kalyan Mohanty Updated on: 06 Oct 2024, 8:04 pm 2 min read

The National Human Rights Commission (NHRC) has issued notice to the Secretary, Ministry of Road Transport & Highway, Govt. of India on the issue of deaths and Injuries of pedestrians, the most environment-friendly commuters due to negligence and inaction of Authorities. The NHRC sought an Action Taken report (ATR) within six weeks.

Acting on a petition filed by Supreme Court advocate and noted human rights activist, Radhakanta Tripathy, the NHRC passed the order.

Citing several examples of deaths and injuries in Indian States, the plea of Tripathy, stated that India's roads are deadly – design fixes could make them safer for everyone. Many scientific improvements such as road consistency, speed lanes, median breaks alongside pedestrian safety features can go a long way. It has been continuing unabated due to proper mechanisms and the failure of the Government to ensure the safety and security of the pedestrians, the plea alleged.

India's 2021 pedestrian fatalities numbered 29,200, exceeding the combined road fatalities of the entire European Union and Japan; with another 60,000 pedestrians injured, he said.

Tripathy, in his plea, stated the violation of rights of pedestrians as deaths and injuries of pedestrians have been highly rising for the last many years. He quoted the report of the Law Commission according to which 53 per cent of road deaths are among pedestrians.

As per the complaint, most of the city roads do not have footpaths, and most footpaths in the cities are in dilapidated condition, with open drains, broken concrete and obstructed by hoardings and encroachers.

"Overspeeding of vehicles is causing 80% of pedestrian deaths and most of the drivers are not aware of Rules 8,11 & 15 of the Rules of the Road Regulations, 1989. The expert committee constituted by the Government of India in 2005 under the Chairmanship of S. Sundar studied road safety management pan India and has recommended the Ministry of Road, Transport and Highways to set up an apex body

the "National Road Safety and Traffic Board" having regulatory and advisory powers under the National Road Safety and Traffic Management Act. But no action has yet been taken by the Government on the recommendations of the S. Sundar committee," Tripathy further said.

Tripathy requested the NHRC to ensure extensive research work on road safety, availability of adequate footpaths, spread safety awareness among road drivers and implement the recommendations of the S. Sundar committee.

"There is thus an urgent need for the Union government to ensure that policy and law safeguard the rights of pedestrians and put in place mechanisms to enforce the same. Creating awareness and mindset change is the first step, especially sensitization of drivers on the rights of pedestrians," Tripathy said.

Lack of footpaths and encroachment of footpaths which causes deaths and injuries violate basic human rights and pose serious issues of fundamental rights of movements, right to life and liberty both are serious problems that need urgent intervention of the Hon'ble Commission. Deaths and injuries of Pedestrians due to apathy, inaction and negligence of government authorities pose serious questions of human rights, the petition of Tripathy, alleged.

## NHRC में अधिकारियों से मिले मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी वॉरियर्स:बोले- बीमारी के चलते दूसरों पर निर्भर थे, चुनौती स्वीकार कर जी रहे जीवन

<https://www.bhaskar.com/local/rajasthan/pali/news/muscular-dystrophy-warriors-met-officials-at-nhrc-133758585.html>

पाली 22 घंटे पहले

स्वावलंबन फाउंडेशन पाली ने राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग (एनएचआरसी) के सहयोग से नई दिल्ली स्थित आयोग के परिसर "उम्मीदों की उड़ान" एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन किया। इसमें मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी से प्रभावित योद्धाओं ने भाग लिया।

इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी जैसी गंभीर बीमारी के प्रति जागरूकता फैलाना और इन योद्धाओं द्वारा अपने संघर्ष के बावजूद हासिल की गई सफलताओं को उजागर करना था।

फाउंडेशन आने वाले छह महीनों में देश के प्रतिष्ठित संस्थानों के साथ मिलकर इसी प्रकार के और कार्यक्रम आयोजित करेगा, जिनका लक्ष्य प्रभावित व्यक्तियों को आत्मनिर्भर बनने की प्रेरणा देना है। यह कार्यक्रम उन योद्धाओं की जीवन यात्रा पर प्रकाश डालता है, जिन्होंने शारीरिक चुनौतियों के बावजूद उल्लेखनीय लक्ष्यों को हासिल किया है।

कार्यक्रम में भाग लेने वाले मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी वॉरियर्स में गांधी नगर, गुजरात के सॉफ्टवेयर इंजीनियर करन वैद्य, राजस्थान के जैतारण (पाली) के भरत सोनी यूपीएससी की तैयारी कर रहे हैं। दकोहा, पंजाब के हरदेव सिंह जो आध्यात्मिक शिक्षक हैं, मथुरा, उत्तर प्रदेश के अभय कुमार जो प्राइवेट होटल में कार्यरत हैं, राजस्थान अजमेर के धीरज साहू MBBS की पढ़ाई कर रहे हैं।

राजस्थान सुमेरपुर (पाली) के जेठाराम कुमावत जो टीचर हैं, दिल्ली की पूर्वा मित्तल जो असिस्टेंट प्रोफेसर हैं, भीलवाड़ा, राजस्थान के गारमेंट व्यवसायी विनोद जैन, फरीदाबाद की नीतूसिंह को निजी कार्मिक हैं। नागौर राजस्थान के मनोज जो नर्सिंग स्टाफ हैं, दिल्ली की मिहिरसिंह जो पढ़ाई कर रहे हैं, जयपुर के दर्शन राणा जो पढ़ाई कर रहे हैं, शामिल रहे।

मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी वॉरियर्स ने बताए अपने अनुभव डेलीगेशन में 5 राज्यों के 12 वारियर्स से भाग लिया। इस दौरान उन्होंने बताया कि पानी पीने, कपड़े पहने से लेकर दैनिक दिनचर्या के प्रत्येक कार्य के लिए अन्य पर निर्भर रहना पड़ता है। उसके उपरांत भी आगे बढ़ने का प्रयास करते हैं और चुनौतियों को स्वीकार कर जीवन जी रहे हैं। इस दौरान वॉरियर्स के अभिभावक भी मौजूद थे।

मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी और उसकी चुनौतियां मस्क्युलर डिस्ट्रॉफी एक आनुवांशिक विकार है, जिसमें मांसपेशियों की कमजोरी और क्षय हो जाती है, जिससे प्रभावित व्यक्ति के लिए दैनिक कार्य करना कठिन हो जाता है। इसका कोई स्थायी इलाज नहीं है, लेकिन उपचार और सही देखभाल से इसे नियंत्रित किया जा सकता है।

कार्यक्रम का मुख्य आकर्षण एनएचआरसी की संयुक्त सचिव अनिता सिन्हा और अन्य वरिष्ठ अधिकारी कार्यक्रम में उपस्थित थे। उन्होंने मस्कूलर डिस्ट्रॉफी वॉरियर्स के संघर्ष और सफलता के अनुभव सुने और उनके साहस की सराहना की। उन्होंने सामाजिक जागरूकता और संस्थागत सहयोग के महत्व पर जोर दिया।

स्वावलंबन फाउंडेशन के डॉ. वैभव भंडारी ने कहा- यह कार्यक्रम केवल जागरूकता फैलाने का एक मंच नहीं है, बल्कि यह दिखाता है कि कठिनाइयों के बावजूद कोई भी अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकता है। इस तरह के कार्यक्रम समाज में सकारात्मकता और बदलाव लाने के लिए आवश्यक हैं।

कार्यक्रम के पूर्व सुबह आयोजित बैठक में सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्री के निजी सहायक भरत चौधरी ने सरकार द्वारा मस्कूलर डिस्ट्रॉफी के क्षेत्र में किए जा रहे प्रयासों पर चर्चा की।

सीएसआईआर-आईजीआईबी के वैज्ञानिक डॉ. मोहम्मद फारूक ने मस्कूलर डिस्ट्रॉफी के निदान और शोध पर अपने विचार प्रस्तुत किए।

बैठक के बाद, वॉरियर्स ने राष्ट्रपति भवन संग्रहालय का दौरा किया। फाउंडेशन की कार्यक्रम समन्वयक सयोनी सोनी, नंदिनी नाग, चंद्रप्रकाश वागोरिया, रमन विश्रोई सहित अन्य उपस्थित थे।